दैनिक हिन्दुस्तान (नई दिल्ली)

5 Feb 2009

ऊर्जा और पानी के लिए होगा तीसरा विश्वयुद्ध

पंतनगर। अगला विश्वयुद्ध हुआ तो वह ऊर्जा और पानी के लिये ही होगा। यह आशंका पंत विवि में रिन्यूअल एनर्जी विषय पर आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में जताई। वक्ताओं ने कहा कि पानी और ऊर्जा के अधिक दोहन से विश्व में इनका संकट गहराने लगा है।

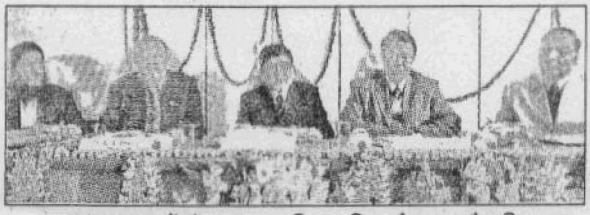

उद्घाटन सत्र में मंच पर कुलपति डा. बिष्ट और अन्य वैज्ञानिक

मुख्य वक्ता निंबकार एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक डा. अनिल रघुवंशी ने कहा कि ऊर्जा और पानी की बढ़ती खपत के चलते इन पदार्थों को पाने की प्रतिस्पर्धा होगी और अगर कभी तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो इन्हीं के लिये होगा। उन्होंने कहा कि हमारे देश में ही प्रतिवर्ष 15000 मेगावाट विद्युत की कमी बनी हुयी है। 2010 तक 140000 मेगावाट विद्युत की और जरूरत होगी, जिसके लिये 600000 करोड़ धन जुटाना होगा। इधर देश में 160 मिलियन लोग ऐसे हैं जिनकी प्रतिदिन की आमदनी 50 रुपये है। वे महंगी ऊर्जा नहीं खरीद सकते। 60 प्रतिशत ग्रामवासियों को बिजली उपलब्ध नहीं है। वहां 180 मिलियन टन बायोमास रोशनी करने

■ कृषि अवशिष्ट पदार्थ बन सकते हैं वैकल्पिक ऊर्जा के स्रोत

तथा खाना बनाने में जला दिया जाता है। जिसके चलते लोग प्रदूषण और दमा जैसे रोगों से पीड़ित हैं। इस स्थिति से निबटने के लिये ऊर्जा के ऐसे विकल्प तलाशने होंगे जो ऊर्जा वृद्धि के साथ-प्रदूषण नियंत्रण में भी सहायक हों। उन्होंने ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की अभी से पहल किये जाने की बात कही।

डा रघुवंशी ने गांव में विकास के नये मॉडल की जरूरत बताते हुये कहा कि गांव के कृषि अवशिष्ट पदार्थों को ईंधन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। भारत में 600 मिलियन टन कृषि अवशिष्ट पदार्थ प्रति वर्ष पैदा होता है जिनका अधिकांश भाग जला दिया जाता है। इससे प्रदूषण फैलने के साथ ही ऊर्जा की बरबादी होती है। कुलपति डा. बी एस बिष्ट एवं अधिष्ठाता डा. एम पी सिंह प्रशिक्षण को लाभकारी बताते हुये कहा कि सौर एवं पवन ऊर्जा को भी वैकल्पिक ऊर्जा के रूप अपनाये जाने को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये। इनके अलावा आम्रपाली इंस्टीट्यूट हल्द्वानी के निदेशक डा. के. के पांडे, उत्तराखंड रूरल एनर्जी डेवेलपमेंट एजेंसी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एल डी शर्मा ने ऊर्जा मितव्ययता एवं संरक्षण पर जोर दिया। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष डा. ए के स्वामी एवं डा. सुधा अरोरा डा. बिष्ट ने विद्युत की बरबादी रोकने का संकल्प लेने को कहा।